1. Acc. No: → 50529. सुन्दर सँगार | सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No: → 50530. नामदेव जी की परिचई | अनन्तदास कृत।

3. Acc. No: → 50531. तिलोचन जी की परिचई | अनन्तदास कृत।

4. Acc. No: → 50532. अंगद जी की परिचई by- अनन्तदास।

5. Acc. No: → 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No: → 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No: → 50535. शकुनावली।

8. Acc. No: → 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No: → 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No: → 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No: → 50529. सुन्दर सँगार | सुन्दर कवि कृत।

॥ ई० ॥ श्री रामजी सहाई ॥ अथ प्रहलाद लीला लीख्यते ॥ कहे धोरे प्रहलाद कहा गुन तू पढ्यौ मैप ढ्यौ राम को नाव और दूजो न ही जानू ॥ राम राम को नांउ और हि रदै नही आनो ॥ कहा पढ औ बावरे और सकल जंजार ॥ भौ सागर जम लौ कते ॥ मोहि कौन उतारै पार ॥ कहा गुन तू पढ्यौ ॥ तब राजा परजरे रोसु अति मन मै कीनै ॥ मेरो बैरी राम ॥ सुतो इन ची तु धर लीनो ॥ बार बार तो सौ कहू ॥ कहयो हमारो

प्रहलाद लीला।

मानि॥ टुकटूक करडारिहो॥ जौरुसु
नू हरिकानि॥ कहागुन तूपढ्यौ॥ जो
बर जैसोबार॥ कह्यौ तेरो नही मा
नौ॥ छाडि स्यंघ की सरन॥ जीर्दकौ
गमन नहि आनू॥ हरनबुंलस कल
मै दे ख्यौ॥ जाकौ यह बिस्तारु॥ जाके
राम सहाइ है॥ ताहि कौन सकै गो
मारि॥ कहागुन तुपढ्यौ॥ राजालि
नीसभा बुलाय॥ बैठि करि मंत्रु
बिचास्यौ॥ याकी लै दे षापर तिन
जाय गीर वर ते मारो॥ गहु सेव कै
कु लैचले॥ लै गये सिषी रिचढाय

तहांपछि कीग मनही ॥ तहांतै दीयो
तुराय ॥ कहागुन तु पढ्यौ ॥ जब प्रय
मी आधीन ॥ हीनके दरसन आइ ॥ म
स्तकिंग चरन छुवाइ ॥ लीये उर सूल
पटाइ ॥ कहा जगत कौ त्रासु है ॥ जा
के आदि अंत नही और ॥ जब कीसे
वा चूकु है तौ ॥ तीनि लोक नही ठौर
कहागुन तु पढ्यौ ॥ हस्त हस्त प्रह्ला
द ॥ जबै चटसाल पधारे ॥ पढ्यो रा
म को नामु ॥ और सब पर हरि मारे
पढते ही परचौ जग्यो ॥ मन उपजो बी
सवासु ॥ जगत नके मन हरखु है ॥

राजाकरतउदास॥कहागुनतुपढो॥६॥
असुरभयेमतिहीन॥जायतैपा
यकदीनै॥अगनिजुवालापरी
जहांनिठआसनुकीनौ॥सकल
देवरछ्यांकरै॥जहांकसैपावक
जाय॥पठयोसीतसहायको॥जा
नैमीनमकरजलन्हाई॥कहा
गुनतुपढ्यौ॥हूनपतीजूताही॥क
छुनरनाटकुकीनौ॥अजहूनसम
ह्योमूढ॥जायजलकूपहिदीनौ॥
कहाजगतकौवासहै॥जाकेधूना
रदसेसाषी॥जाकेरामुसहायहै

ताकोतकजोवैतहाराघी॥कहागु
नतुपढ्यो॥निसिबासुरनहीमरै
षड॰गबाध्योनहीबंधे॥अगिनबा
नेनहीमरै॥जुधकोईनहीजीतै
रौयामैयामरतेनहीं॥नाधरनी
आकास॥सिवब्रहमाकीकोगीनै
वैसोचतुर्थिभवननाथ॥कहागुन
तुपढ्यो॥ईतोगरबुजिनकरो॥ना
घवैगरबप्रहारी॥संबासुरसेमा
रे॥आदिबाराहपछारे॥हमैतुमै
दोउनबलहीनो॥वैत्रिभुवनकेई
स॥मोमैतोमैषडगवंभमे॥हरीर

॥२०॥

हे जगदीस ॥ कहा गुन तु पढ्यौ ॥ क
रग हिली नौ षड गु ॥ बांधि सन मुष
कीनौ ठाढौ ॥ बार बार तो सूकहू
इहि अदेसो मोही ॥ जो या पंच मे
राम हे ॥ तौ आनि छु मावै तो हि
कहा गुन तू पढ्यौ ॥ असत्र नये रावे
मान ॥ उदै जब रजनी कीनौ ॥ अर
धबंन की छाह ॥ उठाई जंघ सत्र ल
लीनौ ॥ नष सष उदर बिधासि के
तिलक दीयो प्रहलाद ॥ बंके घंम
ब्रह मंड मे ॥ तिनी लोक नई गाज
यहै गुन तू पढ्यौ ॥ जहा जहा संक

दे षो जा
य गो भो
गा प कर
क्यौ नी रा
षो गा ढो
१=३